अशोक बाहर से प्रगतिशील दिखाई पड़ता किन्तु वह वास्तव में निरंकुश शासन का आकांक्षी था। अशोक दीप्ति को प्यार करने के लिए व्याकुल हो उठा था उसे एकांत नहीं मिल पाया था इसका कारण वह खुद ऐसी कल्पनाओं में खो जाता जिस पर ''बड़े-से-बड़े व्यभिचारी भी शर्म आ जाए।''

स्त्री को पूरी आजादी मिलनी चाहिए बाकी सबके लिए मांसलता महत्व रखती थी। सुन्दरता और बदसूरती में कोई खास फर्क नहीं करता था। अशोक अपने विचारों व बात से अपने अन्य दोस्तों को परास्त करता और इसका प्रभाव दीप्ति पर पड़ता था। जिसका परिणाम यह हुआ कि दीप्ति शंकर के और मित्रों की उपेक्षा करने लगी और अशोक को सबसे अधिक महत्व देने लगी थी। कभी-कभी जब बहस होती तो दीप्ति अशोक का ही पक्ष लेती कभी-कभी उत्तेजित भी हो जाती। यह बात उसके भाई शंकर को नापसंद थी पर वह कुछ नहीं कहता किन्तु कभी-कभी डांट भी देता था। इस पर अशोक दीप्ति का पक्ष लेता और शंकर को कहता- ''ठीक ही तो कह रही है। खास बात तो यह है कि तुम डिक्टेटर किस्म के आदमी हो और उसको दबाकर रखना चाहते हो।'' धीरे-धीरे अशोक और दीप्ति में करीबी बढ़ती गई और अशोक दीप्ति को नारी उत्थान का लम्बा-चौड़ा भाषण देकर उस पर प्रभाव जमाता रहा। अशोक उसे समस्त पुरानी मान्यताओं तथा रूढ़ियों को तोड़ने को कहता। नारी के हक में जब वह दीप्ति से बोलता तब दीप्ति उससे और प्रभावित होती। अशोक का मानना था कि स्त्री को पूरी आजादी मिलनी चाहिए तभी देश की तरक्की हो सकती है। इस बात का दीप्ति पर बहुत प्रभाव पड़ा और अशोक उसकी नजर में सबसे ऊपर हो गया। उसे लगने लगा अशोक ही है जो स्त्री की इतनी इज्जत करता है। इस बात का दीप्ति के मन में इतना प्रभाव पड़ा कि अशोक की चर्चा अपनी सहेलियों से भी करती हमेशा उसी की तारीफ करती रहती। इस कारण कभी-कभी उसकी सहेलियां दीप्ति का मजाक भी उड़ा दिया करती। दीप्ति को लगता अशोक भी उसे चाहता है शायद इसी कारण वह बन-ठन कर आता है। दीप्ति हमेशा अशोक को लेकर सोचती रहती और उसी के सपने देखती रहती। अशोक भी खुद को नायक समझता था और महान, योग्य सुन्दर पुरुष समझता है। उसके जीवन में कई लड़कियां पहले भी आ चुकी है किन्तु उसकी नारी की भूख बढ़ती गई थी। किन्तु उसे इस बात का यकीन न था कि दीप्ति इतनी जल्दी उस पर आकर्षित हो जाएगी। इस कारण वह खुद पर गर्व भी करता। अशोक जानता था कि उसके साथी भी दीप्ति के प्यार के लिए लालायित रहते हैं किन्तु वह अपनी आकांक्षा छुपाए रखते हैं। अशोक बाहर से प्रगतिशील दिखाई पड़ता किन्तु वह वास्तव में निरंकुश शासन का आकांक्षी था। अशोक दीप्ति को प्यार करने के लिए व्याकुल हो उठा था उसे एकांत नहीं मिल पाया था इसका कारण वह खुद ऐसी कल्पनाओं में खो जाता जिस पर ''बड़े-से-बड़े व्यभिचारी भी शर्म आ जाए।'' एक बार सभी मित्रों का पिकनिक जाने प्रोग्राम बन गया उसी दौरान अशोक की नजदीकी दीप्ति की सहेली कुन्ती से गई। इस पर दीप्ति को बहुत चिढ़ हो गई। उसे लगने लगा कि उसने जितनी बात अशोक के लिए सोची थी सब गलत था। अशोक भी कुन्ती को पाकर दीप्ति को लगभग भूल-सा गया था। दीप्ति ने सोचा था कि आज अशोक के साथ खूब घूमेगी, हंसेगी, लेकिन इस सब पर पानी फिर गया। अशोक पर दीप्ति को बहुत क्रोध आया और वह अकेले जाकर बैठ गई। अकेले बैठे दीप्ति को देख वहाँ मनफूल पहुंच गया। मनफूल पेशे से वकील था और पहले से ही दीप्ति को मन-ही-मन चाहता था। इस परिस्थिति का मनफूल पूरा लाभ उठा लेना चाहता था। मनफूल एक ही सांस में अशोक की सारी करतूतों का पर्दाफाश करके दीप्ति के मन में जगह बना लेना चाहता था। और इसमें वह काफी हद तक सफल भी हो गया था। पिकनिक में अशोक की हरकतों को देखकर दीप्ति को बहुत दुःख हुआ। वह सारे दिन गुमसुम रही। इसी बीच मनफूल वहां पहुंच जाता है और अशोक के कारनामे के समस्त काले चिट्ठे दीप्ति के आगे खोलकर रख देता है। दीप्ति उससे पहले ही जलीभुनी रहती है और मनफूल की ये बातें आग में घी का काम कर जाती हैं। इसकी परवाह अशोक को बिलकुल न थी। वह कुन्ती के गदराए जिस्म की खुशबू में मदहोश हो गया था। उसकी सारी दिलचस्पी कुन्ती की ओर केन्द्रित हो गयी थी। कुन्ती गोरी न थी किन्तु गदराया जिस्म अशोक को आकर्षित करने लगा था। अशोक को यह अहसास हो चुका था कि किसी विशेष परिस्थिति के दबाव में वह दीप्ति से हाथ धो बैठे किन्तु वह कुन्ती को खोना नहीं चाहता था।

यद्यपि मनफूल शादीशुदा था किन्तु सुन्दर स्त्री देखकर उसका जी मचल उठता